शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 12
Issue 1&2
15 July 2021

डॉ० बालेन्दु शेखर तिवारी के व्यंग्य साहित्य में एकल परिवार

बीज शब्द :

व्यग्यं साहित्य, सामाजिक परिवर्तन, एकल परिवार व संयुक्त परिवार, नारी विमर्श, पति प्रदर्शनी

एकल परिवार मे पत्नी का महिलाएँ स्वछन्द विचरण करती हैं। क्योंकि उन्हें अपने सास-ससुर देवर-जेठ का कोई भय नही रहता। बालेन्दु शेखर तिवारी ने इस प्रकार की पत्नियों पर विशेष व्यग्यं किया है। आधुनिक युग के एकल परिवारों के अन्दर पत्नी की स्थिति बहुत मजबूत हो गई हैं। पत्नी अपनी सहेली के साथ बाजार चली जाती हैं और पति घर पर रहकर घरेलू नौकर का काम करता है। इस प्रकार एकल परिवार में पतियों पर पत्नियॉ बर्तनों से प्रहार कर उन्हें घायल कर देती है। परन्तु संयुक्त परिवार में यह सम्भव नही है। यहॉ पतियों की पीडा पर दर्दनाक व्यग्यं किया गया है। बालेन्दु शेखर के व्यग्यं साहित्य में अपने सम्पूर्ण तेवर के साथ उभरा है।

*****

डॉ० राजनारायण शुक्ल
हिन्दी विभाग
शंभुदयाल पी0जी0 कालेज, गाजियाबाद
डॉ० बीना शुक्ला
नवोदय विद्यालय, जी0बी0 नगर, उ0प्र0

डॉ० बालेन्दु शेखर तिवारी के व्यंग्य साहित्य में एकल परिवार

एकल परिवार में पत्नी या महिलाएं स्वच्छन्द विचरण करती है। क्योकि उन्हें अपने सास-ससुर, देवर-जेठों का कोई भय नहीं रहता। बालेन्दु शेखर तिवारी ने इस प्रकार की पत्नियों या महिलाओं पर विशेष व्यंग्य किया है। इनमें आनन्ददायिनी कन्याएँ हैं, जिनके कारण जब एक घर में आग लगती है तो आग पर काबू पाने में तो आधा घंटा लगता है परन्तु फायर ब्रिगेड के जवानों पर काबू पाने में लगभग दो घन्टे लग जाते हैं।

इनके साथ-साथ ऐसी-ऐसी सन्नारियां है जो दिखने में पचास वर्ष के करीब उम्र की लगती है लेकिन अपने आप को चालीस की समझती हैं तीस वर्ष की महिला जैसे कपड़े पहनती हैं, और बीस वर्षीय युवतियों जैसी हरकतें करती हैं।[1]

ऐसा वे क्यों करती है? क्योंकि वे एकल परिवार में केवल अपने पति व एक या दो बच्चों के साथ रहती हैं। सास-ससुर या बड़ों का ना वे सम्मान करती हैं न ही उन्हें बड़ों का भय रहता है, इसलिए विश्व सुन्दरी बनने का प्रयास करती है।

आधुनिक युग में एकल परिवारों के अन्दर पत्नी की स्थिति बहुत मजबूत हो गई हैं। पत्नी अपनी सहेली के साथ सिनेमा व बाजार चली जाती हैं और पति घर पर अकेला रहकर घरेलू नौकर का काम करता है। डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी का व्यंग्य एकांकी 'आइडिया फेल हो गया' में इसका चित्रण किया गया हैं। इस व्यंग्य के एकांकी का मुख्य पात्र गणेश की पत्नी मीरा सिनेमा देखने जाती है। पीछे से उनका मित्र किशोर उससे मिलने आता है। गणेश बड़ा प्रसन्न है किशोर पूछता है कि इतना प्रसन्न क्यों है तो गणेश कहता हैं कि पत्नी सिनेमा गई है, इसलिए घर में अपना ही राज है। किशोर कुछ आइडिया बताता है कि पत्नी के सामने शेर बनकर रहा करे परन्तु जब पत्नी सिनेमा से वापिस आती है तो पति की क्या हालत होती है इस पर व्यंग्य किया गया है- ''जयन्ती तकलीफ न हो तो कहूँ! मोटा बहन, सिनेमा जाने के पहले कह गई थी कि कपड़े धो-सुखाकर आयरन कर देना, डायनिंग टेबल जरा साफ कर देना। सो कुछ नहीं। लौटी तो मुझसे पूछने लगी- ''कहां गई थी क्यों गई थी?

मीरा- ''अच्छा! मेरे मिस्टर भी यही पूछ रहे थे। कही ऐसा तो नहीं कि.....''

किशोर- ''जी कुछ नहीं, आप लोग कॉफी पीजिए, गणेश भाई ने बड़े प्यार से बनाई है।''

गणेश- ''सो तो ठीक है, लेकिन किशोर तुम्हारे उस आइडिया का क्या हुआ?''

किशोर- ''आइडिया तो बुरी तरह फेल हो गया।[2]''

इस प्रकार से दोनों पतियों का आइडिया कि पत्नियों को काबू में किस प्रकार से रखा जाये, फेल हो गया।

अतीत काल में संयुक्त परिवार होते थे और एक माता-पिता के पास आठ-दस बच्चे होते थे। उनमें यदि किसी के पास छः बेटे होते थे तो समाझिए, उनका और पति का ही पत्नी पर नियंत्रण होता था धीरे-धीरे समय बदला, संयुक्त परिवारों का स्थान एकल परिवारों ने ले लिया। जब से एकल परिवार बने है। पत्नियों ने पति पर नियंत्रण रखना आरंभ कर दिया। जो कार्य पंत्नियों को करना था वह कार्य पतियों द्वारा करवाया जाने लगा। संयुक्त परिवार में जहां पत्नियों या बहुओं को पीड़ित किया जाता था, वहां अब एकल परिवार में पतियों को पीडित किया जाने लगा है।

डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी के व्यंग्य में एकांकी ''पति प्रदर्शनी'' में पतियों की पीड़ा को व्यंग्यात्मक रूप से प्रदर्शित किया गया है। एकांकी का मंच संचालन चुनिन्दा पतियों को मंच पर बुलाकर नुमाइश लगाकर किया जाता है। सबसे पहले पटेल को बुलाया जाता है उससे पूछा जाता हैं ''कि आपकी शादी किस प्रकार से हुई।'' उसने बताया लव मैरेज हुई थी, पटेल से पूछा गया लव और अरेंन्ज में क्या अन्तर है? पटेल अपनी लव मैरिज को व्यंग्यात्मक शैली में बताता है।

पटेल- ''बहुत फर्क है जी। वो क्या है कि लव के जमाने में जहाँ-जहाँ जाता था, वो मेरे पीछे पीछे जाती थी और अब तरक्की हुई हैं जी वो जहां जाती हैं मैं उनके पीछे पीछे जाता हूँ।[3]

जब पटेल से पूछा जाता है कि आपकी फैमिली लाइफ कैसी कट रही है. तो पटेल का कथन- 'बहुत अच्छी, हम बारी-बारी से दोनों खुश होते हैं'' वो खुश किस प्रकार से होते हैं। वह भी सुनिए-

पटेल- ''वो ऐसे कि मेरी ओर निशाना लगाकर बर्तन मारती है जी ''और हर बार निशाना चूक जाती हैं तो मैं खुश होता हूँ जी, और जब मेरे पर निशाना लग जाता हैं तो वो खुश होती हैं जी।'[4]

इस प्रकार उक्त उदाहरण में एकल परिवार में पतियों पर पत्नियाँ बर्तनों से प्रहार करके उन्हें घायल कर देती हैं, परन्तु संयुक्त परिवार में यह संभव नहीं है। पतियों की पीड़ा पर कितना दर्दनाक व्यंग्य किया गया है।

अब आप अगले एकल परिवार में पतियों की पीड़ा पर व्यंग्य देखिए। अपने पत्नी से पीड़ित पति हैं, शर्मा। शर्मा जी की

पत्नी अपने पति से झांड़ू लगवाती हैं। जब शर्मा जी से पूछा कि आपने झांड़ू लगाना कहाँ से सीखा? तो शर्मा जी बड़े आदर के साथ व्यंग्य करते हुए कहते है- ''आर्ट है जनाब, सीखते-सीखते आएगा झांड़ू लगाना। हमने तो अपने पिता से सीखा था उनके जैसा झाड़ू चौम्पियन समूचे हिन्दुस्तान में पैदा नहीं हुआ। क्या हाथ था उनका, क्या आर्ट था।[5]

अर्थात् शर्मा जी के पिता भी एकल परिवार में ही अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहते थे और वे भी पत्नी के वफादार जमादार थे जो घर में झांड़ू लगाते है। मों पर घी, बाप पर बेटा, ज्यादा नहीं तो थोड़ा-थोड़ा। परन्तु यहाँ पर शर्मा जी तो अपने पिता के पदचिह्नों पर शत-प्रतिशत चल कर पत्नी की झाड़ू सेवा कर रहे है। और पत्नी शर्मा को पूरी तरह पीडित कर रही है। इसके साथ-साथ शर्मा जी की सेहत भी बुलन्द हैं। जब शर्मा जी से इसका राज पूछा जाता है तो शर्मा जी व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि मैं बाग में टहलने जाता हूँ, अब शर्मा जी से यह जानिए जब आप पत्नी पीड़ित हैं तो आपको बाग में टहलने का समय किस प्रकार से मिल जाता है।

शर्मा इस का रहस्य भी उजागर करते शर्मा हुए कहते हैं:-

शर्मा- यस मिसेज शर्मा, दरअसल शादी के बाद हमने आपस में यह तय किया था कि हम झगड़ा नहीं करेंगे। तभी यह फैसला भी हुआ था कि अगर मिसेज शर्मा मेरी बात नहीं मानेगी तो वे बाग में रह लेगी और अगर मैं मिसेज शर्मा की बात से असहमत रहूंगा तो मैं बाग में रह लूगाँ।[6]

अब शर्मा जी पर व्यंग्य किया गया है कि घर का मालिक कौन है तो शर्मा जी छाती चौड़ी करके कहते हैं कि घर का मालिक बनने का अधिकार मुझे दिया गया है। नाश्ते व डिनर में क्या बनेगा, इसका निर्णय भी शर्मा जी ही लेते है। और निर्णय का लाभी पति की पीठित करे उनकी पत्नी पूरा लाभ उठाती है। शर्मा जी स्वयं अपने सुन्दर मुख के द्वारा वर्णन करते हैं।

शर्मा बेशक, घर का मुखिया होने के कारण ऐसे तमाम फैसले सिर्फ मैं करता हूँ। मिसेज शर्मा तो केवल यह बता देती है कि क्या बनना है और में तुरन्त अपनी सहमति देता हूँ और किचन में बिजी हो जाता हूँ। आनन्द किचन में आप क्या करते हैं?

शर्मा क्यों? खाना पकाता हूँ और क्या? अब मिसेज शर्मा को तो फुर्सत है नहीं। और फिर मैने मथुरा के पाक संस्थान से डिप्लोमा किस लिए लिया है? मिसेज शर्मा को किचन में फंसाने के लिए।

उक्त उदाहरण से ज्ञात होता है कि शर्मा जी एक आदर्श पति हैं और मिसेज शर्मा एकल परिवार की प्रधान मंत्री हैं। चाहे ये संयुक्त परिवार में होती तो उनकी शक्ति उस समय उतनी अधिक न होती। इस से प्रतीत होता है कि एकल परिवार में पत्नी की शक्ति बढ़ी हैं और पति बेचारा सिर्फ एक घरेलू नौकर बनकर रह गया है।

अब इस व्यंग्य एकाकी के अगले पति, पतियों के शिरोमणि श्री गोपाल बाबू को आपके सम्मुख लाते हैं। श्री गोपाल बाबू भी एकल परिवार के अकेले पति है, उनकी पत्नी की शद्रि भी एकल परिवार में अमेरिका के राष्ट्रपति से कम नहीं हैं। गोपाल बाबू की पत्नी से पहला परिचय शादी के समय हुआ। दोनों ने पहलवानों की तरह हाथ मिलाया और हो गई शादी परन्तु यहां पर एक विशेष यह रही कि जब दो पहलवानों की कुश्ती होती हैं तो पहले से पता नहीं रहता। परन्तु गोपाल बाबू और उनकी जीवन की कुश्ती में यह पहले से ही पता है कि इस कुस्ती में कौन जीतेगा, जब गोपाल दास पर व्यंग्य करते हुए प्रश्न किया गया तो उनका उतर स्पष्ट था

गोपाल फिर बच्चा कुस्ती और शादी में जो फर्क है, सोन पता होगा कि भैया कि कुश्ती में पहले पता नहीं रहता कि कौन जीतेगा, जबकि शादी के बाद पत्नी जीतेगी- यह सबको पता रहता है।[8]

डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी इसी एकाकी में व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि ये तो हिन्दुस्तानी हसबैण्ड की पहचान है ये कि इस देश के पति मोटरगाड़ियाँ की तरह होते हैं। पहले साल तो चुस्त-दुरुस्त रहते हैं, उसके बाद उनके नट ढीले होने लगते हैं। और किस्म-किस्म की आवाजें निकलने लगती हैं।

एक परिवार में पत्नियों की आर्थिक शद्रि में भी बढ़ोतरी हुई हैं। पति बेचारा दिन-रात कोल्हों के बैल की तरह काम करके पैसा बचाता है पल्तु उस पर नियंत्रण पत्नी का होता है। पति को खर्चे के लिए पत्नी ही पैसे देती हैं। यदि पति का बेटा टॉफी मांगता हैं तो भी पति को सोचना पड़ता हैं। पति प्रदर्शनी एकांकी में व्यंग्य किया गया हैं कि गोपाल का बेटा गोपाल से टॉफी मांगता है तो देखिए गोपाल बेचारा किस प्रकार से बेटे को टॉफी दिलाता है।

गोपाल- अरे, यह तो हमारा बबूल हैं, क्यों बेटे, क्यों रो रहे हो?

बबलू- (रोते हुए) माँ ने मारा?

गोपाल- तो इसमें रोने की क्या बात है? कभी मुझे रोते हुए देखा हैं।

बबूल- (रोते हुए) टॉफी लूंगा, टॉफी लूंगा।

गोपाल हाँ, हाँ चलो, टॉफी खरीद दूंगा। कल तुम्हारी माँ ने जाते समय जो रूपया दिया था, उसी में अल्प बचत कर मैने चालीस पैसे बचाए हैं।

चल तुम्हें टॉफी से दूंगा (आनन्द से) अच्छा चलता हूँ मैया बबूल को टोका देनी है, घर पर जाकर छत पर सूखने के लिए पसारे गये कपड़े उतारते हैं, चावल में से ककड़ चुनने हैं। बहुत सारे काम है भैये, सारा काम पड़ा है चलता।[10]

उक्त उदाहरण से प्रतीत होता है कि आर्थिक शद्रि के साथ-साथ एकल परिवार में पति को मारने की शद्रि भी बढ़ गई है। जभी तो गोपाल बाबू से कहता है कि मैं कभी नहीं रोता, तेरी अम्मा मुझे भी तो मारती है। आर्थिक शद्रि नारी के हाथ में एकल परिवार में कितनी हैं। डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी के व्यंग्य करते हुए कहा है कि बेचारे गोपाल को चालीस पैसे भी टक्की के लिए पत्नी द्वारा दिये गए खर्च के पैसे से बचाना पड़ा। इसके अतिरिक्त पत्नी द्वारा गोपाल को कितना पीड़ित किया जाता है कि कपड़े धोने, छत पर सुखाने, चावलों में से कंकड़ निकालना, आदि सभी कार्य एकल परिवार में पति को करने पड़ते हैं। डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी जी के व्यंग्य के अनुसार एकल परिवार में पत्नी के आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक सभी स्थितियों से आगे निकल गई है।

डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी कृत व्यंग्य एकांकी पति प्रदर्शनी के अंतिम पात्र हैं शमशेर उनका जैसा नाम है वे अपने को शेर से कम नहीं समझते। एकल परिवार में पत्नी के साथ रहते हैं अब तक नारक के मंच संचालक आनन्द अभी तक ऐसे ही पतियों को ही स्टेज पर पेश करते आये है जो अपनी पत्नियों के सामने टुरते हैं और पत्नी के हर आदेश का पालन करते हैं। लेकिन अब शमशेर नामक पति को आदर्श पति के रूप में जो मंच पर प्रस्तुत किया जा रहा हैं। वह शमशेर है, जो अपने को अन्य पतियों से अलग समझते हैं वे तुलसी राम की बात को सच मानते हैं कि, शुद्र, पशु ढोल, गंवार आदि नारी यह सब ताडन के अधिकारी। वे स्त्री को प्रताडित करने पर अधिकांश विश्वास रखते हैं। परन्तु वास्तविकता कुछ और हैं। वे भी एकल परिवार में पत्नी के पूरे गुलाम हैं। जब उनसे मंच संचालक ने पूछा कि आज सवेरे ही चक्की पर गेहूँ का झोला लिये कौन खड़ा था तो उनका व्यंग्यपू र्ा उतर था

शमशेर सो तो सही है कि मैं आलू खरीद रहा था और गेहूं पिसाने आटा मिल तक गया था। लेकिन आलू और आटे को ढोकर लाया कौन? मैं कि आप! मेरी बीबी बाजार से सात किलों आलू उठाकर लाई, पन्द्रह किलो आटा भी चक्की से वही ले आई। घर का सारा काम करवाता हूँ उसी से मजाल हैं कि।[11]

बाकी सभी पतियों से परमवीर आदर्श पति कहलाने का अधिकार तो शमशेर को ही जाना चाहिए। क्योंकि शमशेर की आशा है कि इस पति प्रदर्शनी से जब घर वापस पहुंचेगा तो स्वादिष्ट भोजन खाने को मिलेगा। लेकिन यह क्या यह तो बाजी पलट गई जो शमशेर अभी तक शेर बने रिते थे और प्रथम पुरस्कार पर अपना अधिकार जमा रहे थे। देवी देवताओं की तरह दुर्गा का रूप धारण किये उनके पत्नी प्रकट हो जाती है और कहती है

श्रीमति शमशेर- सब सुन रही हूँ मैं घर से नमक खरीदने निकले हो सिखाऊंगी कि अपना नाम भूल जाओगे।

और यहाँ आकर भाषण झाड़ रहे हो। चलो घर चुपचाप आज ऐसा सबक

शमशेर- लाजवन्ती तुम यहाँ कैसे आ गई।

श्रीमति शमशेर- कैसे आ गई? पैरों से चलकर आई हूँ और तुम्हें घसीटकर ले जाऊगी। ऐसा काम चोर पति आप लोगों ने नहीं देखा होगा भाइयों। ये न बच्चों का होमवर्क ठीक से करवाते हैं और न इन्हें चटनी पीसने की कला मालूम हैं। अभी घर पर सब्जी नहीं बनी हैं और ऑगन की सफाई तक नहीं हुई हैं और ये महाराज यहाँ आकर लपक कर शमशेर का हाथ पकड़ लेती हैं और घसीटती हुई घर ले जाती हैं।[12]

डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी ने पति प्रदर्शनी व्यंग्य एकाकी में पत्नियों की एकल परिवार की स्थितियों का व्यंग्यपूर्ण चित्रण किया है। जो शमशेर अपने को शेर कहता है उसने भी पत्नी के सामने चूहा बनकर सबके सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

डॉ0 बालेन्द्र शेखर तिवारी के व्यंग्य लेख श्पति होने के फायदे में एकल परिवार में पत्नी ऐसा पति चाहती है जो सस्ता, सुन्दर, टिकाऊ, और मजबूत के साथ-साथ सर्वगुण सम्पन्न होना चाहिए। पति पत्नी के संकेत मात्र से ही हिलता हो। जो पति के अतिरिक्त और कुछ नहीं होना चाहिए। प्रत्येक पत्नी अधिनायक तन्त्र बनना चाहती हैं और आजकल ऐसा हो भी रहा है। डक्क्ष बालेन्दु शेखर तिवारी ने इसी एकल परिवार में पत्नी की इसी समस्या को लेकर व्यंग्य किया हैं।

अच्छे पति से अपेक्षा की जाती हैं कि वह सस्ता, सुन्दर, टिकाऊ और मजबूत हो। सच तो यह है कि अच्छे पतियों के लक्षण सीमित हैं और उन गुणों का बखान करने के लिए शब्द अंतिम हैं। पुराणों और उपनिषदों में ऐसे पति सर्वोत्म कहा गया है जो सिवाय पति होने के कुछ और नहीं हैं। कोई अच्छा पति बन जाए, तो फिर लगातार पति बने रहने के सिवा और क्या कर सकता हैं। ऐसी आदत लग जाती है कि एक पत्नी के गुजर जाने पर आदमी दूसरी पत्नी का पति बनने के लिए बेकरार हो जाता हैं। अच्छा पति होना सभ्य नागरिक की पहचान हैं, जो जितना अच्छा पति होगा, वह उतना ही अच्छा और होनहार नागरिक होता है। अच्छा पति होने की सबसे पहला और एक साथ शर्त यही है

कि वह पत्नी परायण है[13]

हमारे देश में जिस समय भारत के साथ कोई अन्य देश क्रिकेट खेल शुरू होता है। उस समय समस्त देश के लोग क्रिकेट के खिलाड़ी बन जाते हैं। और तो और एकल परिवार में पत्नियाँ भी क्रिकेट की खिलाड़ी बन जाती है। जैसे ही पति महोदय का चौके में प्रवेश होता है, धर्मपत्नी के ने लाग आन पर ही कैच कर लेती है। डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी इसी पर व्यग्य करते हुए कहते हैं कि–

पति महोदय जैसे ही चौके में आए उनकी धर्मपत्नी ने लाग आन पर ही कैच कर लिया।[14]

धर्म पत्नी द्वारा क्रिकेट के खेल पर अच्छा व्यंग्य किया है।

डॉ0 बालेन्द्र शेखर तिवारी कृत व्यंग्य लेख रूठने के फायदे में पत्नियो के रूठने का व्यंग्यपूर्ण चित्रण किया है। आदर्श भारतीय नारी के सबसे बड़ी और अपनी बात को मनवाने का हथियार रूठना है। नारी का रूठने का यह कार्यक्रम प्राचीन काल से चला आ रहा है। प्राचीन काल में यदि श्रीमति कैकयी देवी रूठने का कार्यक्रम आयोजित नहीं कस्ती तो राम को 14 वर्षों का बनवास और उनके प्रिय पुत्र भरत को राजतिलक न होता।

कैकयी के बिना रूठे श्री दशरथ स्वर्गवासी होने वाले नहीं थे। श्रीमति सीता जी सोने की चमड़ी वाले हिरण के लिए नहीं रूठती तो सोने की लंका नहीं जलती और न ही रावण परिवार सहित स्वर्गवासी होता। यदि श्रीमति द्रौपदी नहीं रूटती तो कौरवों व पाण्डवों के बीच महाभारत का युद्व नहीं होता। अर्थात् दुनिया में जो भी ऐसी घटना घटित होती है वह नारी के रूठने से ही होती हैं। प्राय: एकल परिवार में पति–पत्नी और उनके बच्चे रहते हैं पत्नी को किसी बड़े का डर तो रहता नहीं। इसलिए अपनी बात को मनवाने का उसके पास सबसे अच्छा हथियार होता है रूठना। इसलिए ससार भर की पत्निया नौकर देखकर रूठती रहती है। और उनके पति परमेश्वर उन्हें मनाते रहते हैं। पत्नियों के लिए रूठना एक टैकनिक का काम करता है जो स्वास्थ्य वर्धक हैं। इसी रूठने का चित्रण डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी अपने व्यंग्य के द्वारा इस प्रकार करते हैं।

पत्नी का रूठना तो प्यार हैं प्यार है तो संसार है। ध्यान देने की बात यह नहीं कि पत्नी किस कारण रूठकर कोप भवन में चली गई है रूठना जरूरी है। अगर पति अपनी निजी पत्नी के रूठने के हर कारण की जासूसी करता रहे तो फिर हो गया कल्याण जरूरी है कि पत्नी रूटे तो आप श्रद्वापूर्वक मनाने में जुट जाए।

प्रयास करने पर आदमी एवरेस्ट पर भी चढ़ जाता है। रूठी हुई पत्नी को मनाना इससे कठिन नहीं है। इसीलिए आदर्श पति अपनी पत्नियों को रूठने की भरपूर छूट देता हैं। पत्नियों को रूठने में आनन्द आता है। और पतियों को उन्हें मनाने में मजा आता है। हर होनहार पति–पत्नी के रूठने का सबडोशाम इंतजार करता है।[15]

रूटने और मनाने में पति–पत्नी में प्यार बना रहता है और स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। रूठना प्यार की साक्षात निशानी है।

एकल परिवार में पत्नी की स्थिति इतनी मजबूत होती है कि यदि पत्नी अपने पति से कोई सामान बाजार से मंगाता है तो पति की इतनी हिम्मत नहीं कि वो बिना सामान लिए घर के अन्दर एक कदम भी रख दे। क्योंकि उसे पत्नी वो के बेलन प्रहार से भय लगता है। डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी ने अपने व्यंग्य लेख होली विरत रन्दनावलीष में इसी का व्यंग्यात्मक चित्रण किया है।

आकाश से गिरकर खजूर में अटके के प्राणी की तरह संशकित और चिन्तित भिसु ने जिज्ञासा की किन्तु शास्ता। मैने देखा सुना हैं कि महिलाएं भी कभी–कभी पुरुषों को वो कहकर पुकारती हैं। गत संध्या ही मैंने सुना कि कोई आर्यरमणी स्वत्रन्त भाषण कर रही थी कि आज अगर वो गैस और चीनी लेकर न पधारे तो वो अन्तर पुर में प्रवेश करने के पूर्व ही बेलन प्रदार से पीड़ित कर दिये जायेंगे।[16] बहुत से पति–पत्नी अपने पति या पत्नी का नाम नहीं लेते तो वह श्वोश कहकर संबोधित करती हैं। और यह सब कुछ एकल परिवार में ही चलता है।

डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी कृत व्यंग्य लेख 'आधुनिकीकरण क पत्नी–प्रयास में पति–पत्नी का व्यंग्यात्मक चित्रण किया गया है। उस युग में एकल परिवार में यदि आप अच्छे पति है और आपकी पत्नी आइडियल पत्नी है। तो आपके लिए बड़े गर्व की बात है और आप लोग पति–पत्नी के रूप में संसार के महान पति–पत्नियो की परम्परा के विराजमान है। क्योंकि आपकी पत्नी और आपके विचार मिलते हैं परन्तु अतीत काल में एक व्यद्रि के पास एक से अधिक पत्नियाँ होती थी, क्या उस समय सबसे विचार मिलना कितना कठिन होता होगा। उस पर एक उदाहरण प्रस्तुत हैं।

महाराजा दशरथ और उनकी रानियों की कहानी से हमारे आदिकवि ने इस सुन्दर परम्परा का उद्घाटन किया था कि आदर्श पत्नी की अपनी बात मनवाने के क्षेत्र में सघन कर्तव्यपरायण होना चाहिए और अच्छे पति को डॉट खाने का अधिकार प्राप्त है। हमारा विश्वास है कि तब से यह असर संसार ऐसे ही पति–पत्नियों के कारण सुखी है। आने वाली शताब्दियों में भी हर आदर्श पत्नी को अपनी बात से मनवाने की कला में भारत रत्न होना चाहिए और अच्छे पति को डॉ खाने का सुअवसर नितान्त फी तौर पर प्राप्त होने चाहिए।[17]

बल्कि ऐसी आदर्श पत्नी के लिए प्रत्येक पति का कर्तव्य

हो जाता है कि सुबह शाम पत्नी का गुणकीर्तन करना चाहिए। उसके विपरीत पत्नियो का जन्मसिद्व अधिकार है कि रणचंडी बनकर पति की खबर लेनी चाहिए। जब तक आप पत्नी की प्रशंसा में जुटे हैं तो सब ठीक है परन्तु आपके इस कार्य थोडी सी भी चूक हुई तो की आपकी खैर नहीं। इस दुनिया में ऐसे भी पति हैं कि अनेक पत्नियाँ होने के उपरान्त भी कभी पत्नियों की डॉट नहीं पड़ी। और हम जैसे ऐसे पति भी है कि एक पत्नी होने पर भी हम पत्नी भद्र हैं। पत्नी का प्रवचन प्रतिदिन सुनते हैं और जीवन में सफल पति कहलाते हैं और पत्नी पतिव्रता। देखिए एक उदाहरण- इस मामले में अलजीरिया का भूतपूर्व बादशाह हज अन्न बेहद भाग्यशाली था। उसने 1935 तक 385, शादियों कर ली थी और सौभाग्यवश अपनी किसी बीबी की भाषा यह नहीं जानता था। उसकी सारी पत्नियां दूसरे देशों की थी, जो अलजीरिया की भाषा नहीं जानती थी। सो इतनी सारी बीवियाँ को इकलौता शौहर होकर भी हज अहमल अपनी किसी भी पत्नी से कभी डॉट नहीं खा सकता। पता नहीं, बेचारे के दिन ओर रातें कैसे गुजरती होंगी। उसने कभी किसी पत्नी से बातचीत ही नहीं की। ऐसे अभागे पतियों की अपेक्षा हम लोग भाग्यशाली हैं कि ऐसी भाषा समस्या का सामना नहीं कर रहे हैं। वास्तविक तो यह हैं कि यह धरती ऐसे ही पतियों से हरी-भरी हैं जो श्रद्वापूर्वक अपनी धर्म-पत्नी का प्रवचन सुनते हैं और उतनी ही भद्रि भावना के साथ पत्नी की आकांक्षाओं का पालन करते हुए अपने जीवन को सफल बनाते हैं।[18]

एकल परिवार में दाम्पत्य जीवन का सुखी रहना बहुत बड़ी बात हैं। इसके लिए सबसे बड़ी बात यह है कि पत्नी के विचारों से तालमेल बिठाना अनिवार्य हैं। उन्हें कोल्डक्रीम पाउडर व उसके आधुनिक व सुन्दर बनने के समस्त साधनों को लाकर पत्नी को देना पड़ेगा। यदि पत्नी को आप लाकर नहीं देते तो आपको टेंशन अवश्य हो जाएगी। झगडाविहीन दाम्पत्य संबंधों को बनाये रखने का सबसे अच्छा अवसर यही हैं कि पत्नी के विचारों को अपनाना होगा। उसका एक उदहरण प्रस्तुत हैं।

'सारा मुहल्ला जानता है, सारा शहर जानता है कि हमारा दाम्पत्य जीवन अत्यंत सुखमय हैं। दरअसल हमने तय किया था कि वैवाहिक जिंदगी में पत्नी जी के विचार ही सही माने जाएंगे और मेरी हर बात गलत घोषित की जाएगी। इसी समझौते पर चलते हुए हमारा विवाहित जीवन पिछले सैंतीस साल से झगडाविहीन है। कहीं कोई संकट नहीं, नो टेंशन। अब चाहे मेरी धर्मपत्नी जी आधुनिक बन जाए अथवा सुपर मर्डन मैं हर स्थिति में उनके साथ हूँ। आज ही एक नए ब्रांड की कोल्डक्रीम लेकर उन्हें दी। तो उन्होंने फरमाया उन्हें तुम मेरी जिंदगी की कोल्डक्रीम हो पता नहीं, यह सुभाषित उन्होंने मेरे लिए कहा या उस कोल्डक्रीम की प्रशंसा में उद्गार व्यक्त किया बहरहाल, श्रीमती जी का आधुनिकीकरण पूरे में है। धर्मपत्नियों को आधुनिक बनाने का कोई नया आइडिया आपके पास हो तो आप सादर आमंत्रित है।

एकल परिवार में सदैव पत्नी की स्थिति मजबूत होती है और वह पति को अपनी उंगलियों पर नचाना अपना जन्म सिद्व अधिकार समझती है। डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी के व्यंग्य लेख बालवर्ष बीत जाने पर एक बेटी समझती हैं कि उसकी मम्मी पहले शायद सर्कस में काम करती होगी। क्योंकि सर्कस में पशुओं को उंगुलियों पर नचाया जाता है। इसलिए मम्मी जी पापा को इसीलिए अपनी उंगुलियों पर नचाती है एक बच्ची के इस व्यंग्य को देखिए एक दिन तो गुडडी ने अपनी मम्मी से पूछा भी था मम्मी क्या तुम- सर्कस में काम करती थी।

चकित मम्मी बोली नहीं तो क्यों?

इस पर सुपुत्री ने जवाब दिया तब मौसी क्यों कह रही थी कि तुम पापा को उंगुलियों पर नचाती हो।[20]

बालेन्दु शेखर तिवारी कृत व्यंग्य लेख एक फोकस होटल पर मैं एकल परिवार में पत्नी की स्थिति का चित्रण किया गया है। एकल परिवार में जब पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो या भोजन बनाने का मूड न हो या मायके बच्चों सहित जाने का मूड हो तो उन्हें एकल परिवार में यह सुविधा उपलब्ध होती हैं। जबकि संयुक्त परिवार में यह सुविधा उपलब्ध नहीं होती। जिस नारी का जो काम निश्चित है, वह उसको करना ही पडेगा। परन्तु एकल परिवार में यह सुविधा पूर्ण से उपलब्ध हैं। क्योंकि आज कल शहर में एक-से एक अच्छे होटल जो खोल दिए गये हैं। इस पर व्यंग्य करते हुए डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी जी लिखते है कि- जब कभी मेरी अर्द्धांगिनी का स्वास्थ्य या मूड रसोई घर से असहयोग आन्दोलन करने लगता है, जब कभी मेरे बच्चों की श्रीमती अपने मायके सिधार जाती है और कभी मैं अपने घरेलू वातावरण में बोर होने लगता हूँ तब होटल की मनोहारी छत्रछाया में आ धमकता हूँ।[21]

होटल में जाकर अच्छे स्वादिष्ट भोजन का स्वाद चखना जैसा पवित्र कार्य जो एकल परिवार में पत्नी के साथ किया जा सकता हैं। वह संयुक्त परिवार में नहीं किया जा सकता। इससे एकल परिवार में पत्नी सर्वेसर्वा होती हैं परन्तु संयुक्त परिवार में पत्नी की स्थिति इसके विपरीत होती हैं।

एकल परिवार में बच्चे भी अपने पापा को ही शेर मानते हैं क्योंकि वे अपने पापा से बहुत डरते हैं। संयुक्त परिवार में बच्चों के दादा-दादी होते हैं जो उन्हें प्रेम-दुलार करते हैं, और यदि

उनके पापा उन्हें कुछ कहते हैं तो भागकर दादा-दादी के पास आ जाते हैं। जिससे पापा उन्हें कुछ नहीं कह पाते। डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी जो व्यंग्य रचनाओं में बच्चे बच्चे भी कुछ कम नहीं है। बाल वर्ष बीत जाने पर शीर्षक वाली रचनाओं में भी इसी प्रकार मधुर व्यंग्य का जायजा लिया गया हैं-'शर्मा जी ने एक पहेली पूछी बताओं वह कौन है जो शेर की तरह आता हैं और मेमने की तरह लौट जाता है। बच्चों के कोरस में उतर दिया- पापा 22

अर्थात् पापा जब घर में प्रवेश करते हैं तो शेर की तरह प्रवेश करते हैं परन्तु जब घर में पत्नी रूपी शेरनी की दहाड़ सुनते हैं तो मेमने की तरह दुम दबाकर घर से बाहर निकल जाते हैं। पति पर क्या कितना अच्छा व्यंग्य किया हैं जो उस बेचारे को मेमने की उपाधि दी हैं।

एकल परिवार में सदैव नारी की स्थिति ही मजबूत होती है। इस पर भी बाल वर्ष में मेरी बाल समस्याएं एक बाल वर्ष बीत जाने पर ये डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी जी के द्वारा चित्रित बच्चों की शरारत की एक बानगी हैं, जो पत्नी की स्थिति को मजबूत सिद्व करती है। सभी बच्चे बैठक में पढ़ रहे थे और हम सपत्नीक रसोई घर में चाय पी रहे थे।

तभी रसोई घर में सारी प्लेटों के धराशाही होने का धमाका हुआ। इस विस्फोट पर बच्चों ने तत्काल संगोष्ठी आयोजित की। गुढी ने कहा- लगता है, मम्मी से सारी प्लेटें गिर गई हैं। उसके दोनों भाई सहमत नहीं हुए। बोले तुम्हें कैसे मालूम हुआ? गुड़डी ने स्पष्ट किया- अगर प्लेटें पापा से गिरी होती, तो मम्मी ने अब तक आसमान सिर पर उठा लिया होता। सो मम्मी से ही प्लेटें गिरी है।[23]

बच्चों की इन बाल सुलभ बातों से स्पष्ट प्रतीत होता हैं कि एकल परिवार में पत्नी की शक्ति बहुत अधिक होती हैं। पुरुष तो केवल बेचारा ही बन कर रह जाता है।

सरल हास्य-व्यंग्य के प्रसंग भी डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी की दृष्टि से नहीं छूटते। जब बालवर्ष शुरू हुआ था तभी एक विशुद्व सरकारी आत्मा हमारे घर आई थी। उक्त महिला घर-घर घुसकर बच्चों की पसन्द और मांग का जायजा इक्कठा कर रही थी। हमारे बड़े साहबजादे से उन्होंने पूछना शुरू किया। बेटे तुम बड़े होकर क्या बनोगे? उत्तर मिला- घोड़ा ।
किसलिए इसलिए कि घोड़े को खाने के लिए माँ के पास नहीं जाना पड़ता।[24]

निष्कर्ष- कहा जाता है क्योंकि एकल परिवार में पत्नी का ही वर्चस्व होता है, सदव पत्नी हा पात
पर भारी पड़ती हैं। इसलिए भी पितृभाषा न होकर मातृभाषा होती हैं।

संदर्भः-

1. 'बिना यात्रा की यात्रा', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, पृष्ठ 43
2. 'आइडिया फेल हो गया', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (सं0) डॉ0 आर. पी. वर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-1, हिन्दी साहित्य संसार, कई सड़क, दिल्ली संस्करण- 1985 पृष्ठ 115
3. 'पति प्रदर्शनी', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ आर.पी. वर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-1, हिन्दी साहित्य संसार, कई सड़क, दिल्ली संस्करण- 1985 पृ0 96-97
4. 'पति प्रदर्शनी', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-1, हिन्दी साहित्य संसार, कई सड़क, दिल्ली संस्करण- 1985 पृष्ठ 97
5. वही
6. वही, पृ0 98
7. वही
8. वही, पृष्ठ 99
9. वही
10. वही, पृष्ठ 99-100
11. वही
12. वही, पृ0 190
13. वही, पृष्ठ 222
14. वही, पृष्ठ192
15. वही, पृ0 175-167
16. 'होली विरह रूपनावली' डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, पृ0 42
17. 'आधुनिकीकरण के पत्नी-प्रयास' डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, यंग्य समग्र- 3, परिजात प्रकाशन, डाक बंगाली रोड, पटना संस्करण- 1985 पृ0 26
18. वही, पृष्ठ 27
19. वही
20. 'बालवर्ष बीत जाने पर' पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र -3, पृ0 29 डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, 20
21. बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-2, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली संस्करण -1986 पृ0 182
22. 'बालवर्ष बीत जाने पर', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0)
23. डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-2, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली संस्करण -1986 पृष्ठ 117
'किराएदार साक्षात्कार', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, पृ0 21
24. वही, पृष्ठ 20
25. वही, पृष्ठ 19
26. 'बिना यात्र की यात्रा', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, पृष्ठ 43
27. 'आइडिया फेल हो गया' डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी. वर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-1, हिन्दी साहित्य संसार, कई सड़क, दिल्ली संस्करण- 1985 पृष्ठ 115
28. पति प्रदर्शनी डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर.पी. वर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-1, हिन्दी साहित्य संसार, कई सड़क, दिल्ली संस्करण- 1985 पृ0 96-97
29. डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, पति प्रदर्शनी, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-1, 1 हिन्दी साहित्य संसार, कई सड़क, दिल्ली संस्करण- 1985 पृष्ठ 97

(शेष पृष्ठ 57 पर)

बाजपेयी(1903), (6)दुलाईवाली-बंग महिला(1907) ये सभी कहानियाँ सरस्वती में प्रकाशित हुई थीं। इस प्रकार हिन्दी के प्रथम कहानीकार श्री किशोरीलाल गोस्वामी सिद्ध होते हैं।''[14] कहानी विधा के विकास का अध्ययन करने के लिए इस अध्याय को क्रमशः तीन उपशीर्षकों हिन्दी कहानी का प्रारम्भिक युग (1930ई0 तक), द्वितीय युग(1930 परवर्ती युग) तथा स्वातंत्र्योत्तरयुग में विभद्र किया गया है। स्वातंत्र्योत्तरयुग के अंतर्गत क्रमशः सभी परवर्ती कहानी आंदोलनों जैसे नयी कहानी, सचेतन कहानी, सक्रिय कहानी, सहज कहानी और समान्तर कहानी इत्यादि की चर्चा करते हुये, उनकी विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की गई है।

हिन्दी साहित्य में आत्मकथाएक स्वतंत्र विधा है। हिन्दी की प्रथम आत्मकथा के रूप में बनरसीदास जैन का जीवनवृत्त 'अध र्कथानक' शीर्षक से पद्य-शैली में 17 वीं शताब्दी में लिखा प्राप्त होता है। वास्तव में गद्य में आत्मकथा लिखने की परम्परा का सूत्रपात भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा हुआ। उन्होंने 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' शीर्षक में एक आत्मकथा लिखनी आरंभ की थी, जिसमें उन्होंने अपने परिवार आदि का परिचय दिया है किन्तु यह रचना दो-तीन पृष्ठों से आगे नहीं बढ़ सकी।''[15]

हिन्दी की आत्मकथाओं का परिचय देते हुए हरिवंशराय बच्चन की 4खण्डों में प्रकाशित आत्मकथा को लेखक ने हिन्दी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ आत्मकथा घोषित किया है। पुस्तक में 'हिन्दी आलोचना का विकास' शीर्षक अंतिम अध्याय में संकलित है। इसमें भारतीय साहित्यशास्त्र की प्राचीन परम्परा का सूक्ष्म परिचय देते हुये हिन्दी आलोचना के इतिहास की समीक्षा की है। अपनी आलोचनात्मक कृति 'साहित्य विज्ञान' के संदर्भ में उनका कथन है, इसमें भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य-शस्त्र, सौन्दर्य-शास्त्र एवं आधुनिक मनोविज्ञान के आधार पर साहित्य की आत्मा(शद्रि), द्रव्य (तत्त्व) एवं शैली (रूप) का विश्लेषण वैज्ञानिक पद्धति से करते हुये आकर्षण शद्रि सिद्धान्त की स्थापना की गई है।''[16] इसी क्रम में लेखक ने हिन्दी के प्रमुख समीक्षकों तथा इतिहासकारों का परिचय देते हुए उनके आलोचनात्मक अवदान को रेखांकित किया है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ गणपतिचन्द्र गुप्त, हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (द्वितीय भाग), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018 ई0,पृ0-318

2. वही, पृ0-318, 3. वही, पृ0-318, 4. वही, पृ0-330, 5. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2020 ई0,पृ0-11, 6. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013 ई0, पृ0-346, 7. डॉ गणपतिचन्द्र गुप्त, हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (द्वितीय भाग), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018 ई0,पृ0-346, 8. वही, पृ0-376, 9. वही, पृ0-377, 10. वही, पृ0-397, 11. वही, पृ0-399, 12. वही, पृ0-401, 13. वही, पृ0-418, 14. वही, पृ0-452, 15. वही, पृ0-468 16.वही, पृ0-484

◆◆◆

(पृष्ठ 35 का शेष) डॉ० बालेन्दु शेखर तिवारी.....

30. 'पति प्रदर्शनी', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र- 1, हिन्दी साहित्य संसार, कई सड़क, दिल्ली संस्करण- 1985 पृ0 97

31. डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यग्य समग्र- 1, पृ0 98

32. 'पति प्रदर्शनी' डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, पति प्रदर्शनी, (स0) डॉ0 आर पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र- 1. पृ0 98

33. 'पति प्रदर्शनी' डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र- 1 पृष्ठ 99

34. वही, पृष्ठ 99

35. 'पति प्रदर्शनी' डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र- 1, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली संस्करण -1986 पृष्ठ 99-100

36. वही, पृ0 100

37. वही पृ0 190

38. 'पति प्रदर्शनी', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र- 3, परिजात प्रकाशन, डाक बंगाली रोड, पटना संस्करण- 1985, पृष्ठ 222

39. वही पृष्ठ 192

40. 'पति प्रदर्शनी', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी (स0) डॉ0 आर.पी. शर्मा, 'होली विरह रूपनावली' बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र- 3, परिजात प्रकाज़न, डाक बंगाली रोड, पटना संस्करण- 1985 पृ0 175-167 16 डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, पृ0 42

41. 'आधुनिकीकरण के पत्नी-प्रयास', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी,व्यंग्य समग्र-3, परिजात प्रकाशन, डाक बंगाली रोड, पटना संस्करण- 1985 पृ0 26

42. डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, आधुनिकीकरण के पत्नी-प्रयास, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-3, परिजात प्रकाशन, डाक बंगाली रोड, पटना संस्करण- 1985 पृष्ठ 27

43. वही, पृ0 29

44. वही

45. बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-2, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली संस्करण -1986 पृ0 182

46. 'बालवर्ष बीत जाने पर', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0)

47. डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-2, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली संस्करण -1986 पृष्ठ 117 'किराएदार साक्षात्कार', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, पृ0 21

48. 'किराएदार साक्षात्कार', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, पृष्ठ 20

49. वही, पृष्ठ 19

◆◆◆